B.A - Sem - III

⇒ Charvaka Ethics! (Charvaka philosophy)
भारतीय दर्शन एक नास्तिक और भौतिकवादी शाखा है। चार्वाक का नैतिक संबंधी विचार पूर तरह से उनके भौतिकवादी सिद्धान्तों पर आधारित है, जिसे 'लोकायत' भी कहा जाता है।

1.) सुखवाद (Hedonism) ही जीवन का परम लक्ष्य है:-
चार्वाक दर्शन के अनुसार, मानव जीवन का सर्वोच्च और एकमात्र लक्ष्य 'सुख प्राप्त करना है।' उनके अनुसार, अर्थ (धन) और काम ही जीवन के वास्तविक पुरुषार्थ हैं। धर्म और मोक्ष को वे काल्पनिक मानते हैं।

2. 'ऋणं कृत्वा घृत पिबेत (जब तक जियो, सुख से जियो)
अर्थ "यावज्जीवेत् सुखं जीवते ऋण कृत्वा घृत पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।"
अर्थ: जब तक जियो, सुख से जियो, चाहे इसके लिए कर्ज लेकर ही घी क्यों न पीना पड़े। क्योंकि एक बार शरीर के नष्ट हो जाने के बाद, यह दोबारा लौटकर नहीं आता।

3.) परलोक, स्वर्ग और नरक का खंडन
चार्वाक केवल उसी को सत्य मानते हैं जिसे इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष देखा जा सके। चूँकि किसी ने स्वर्ग या नरक नहीं देखा इसलिए वे इन्हें मनगढंत मानते हैं। उनके अनुसार

B.A - Sem - III

charavka ethics

- स्वर्ग: जीवन में मिलने वाले सुख और आनंद ही स्वर्ग है।
- नरक: - जीवन में मिलने वाले दुःख और काँटे जैसी पीड़ा ही नरक है।

4) पाप और पुण्य की अवधारणा का विरोध
परंपरागत भारतीय दर्शन में नैतिक कार्यों को पुण्य और अनैतिक कार्यों को पाप माना जाता है, जिसका फल अगले जन्म में मिलता है। चार्वाक पुनर्जन्म को नहीं मानते। उनके अनुसार, ऐसा कोई कर्म नहीं है जो अपने आप में पाप या पुण्य हो। जो कार्य सुख दे वह अच्छा है, और जो दुःख दे वह बुरा है।

5) कर्मकांडो और वेदों का विरोध
चार्वाक का मानना है कि यज्ञ, श्राद्ध और अन्य धार्मिक कर्मकांड पुरोहितों द्वारा अपनी आजीविका चलाने के लिए बनाए गए पाखंड है। यदि श्राद्ध करने से स्वर्ग में बैठे पूर्वजों का पेट भर सकता है तो घर की छत पर बैठकर भोजन करने से नीचे मंजिल पर बैठे व्यक्ति का पेट क्यों नहीं भरता।

6) सुख के साथ जुड़े दुःख को स्वीकार करना
चारवाक यह स्वीकार करते है कि संसार में सुख के साथ दुःख भी जुड़ा होता है। लेकिन दुःख के डर से सुख का त्याग करना मूर्खता है।
- जैसे कोई व्यक्ति इस डर से मछली खाना नहीं छोड़ता कि उसमें कांटे है। वही कांटे को हटाकर मछली खाता है।